Str. 340, 5. Schol. दशमीस्य इत्यपि।

Str. 341, 6. Schol. कवितापि । — 7. मनीषी यै। धीमान्मतिमानि-त्याद्यः ।

Str. 342, 10. Calc. Ausg. दत्ता — Die Scholien: कृतकर्मा। या॰ कृतकृत्यः कृतार्थः कृती।

Str. 343, 13. Calc. Ausg. und D. प्रतिभामुख:, die Scholien: प्रति-भान्वित u. s. w. = सर्वव्यापार्समर्थ।

Str. 344, 17. Schol. ह्यादेवार्घदर्शकः । तस्य नामैकम् दोर्घदर्शो ह्य-

Str. 345, 18. = वस्तुतह्यज्ञानयुक्त, die Schol. - 19. 20. = श्रह्मा-दिकतह्यचतुर. - 21. = श्रह्मं वेत्ति ज्ञानाति । न च तथा वकुं श्रक्नोति. Man verbessere demnach die deutsche Uebersetzung.

Str. 346, 23. Die Scholien und eine Randbemerkung: वागमी, vgl. auch zu Pânini V. 2 124. Berücksichtigt man गामिन und das Verhältniss von मिन zu विन (vgl. Pân. V. 2 102, 114, 121, 122.), welches dem von मत zu वत entspricht, so ergiebt sich वागमन als ursprüngliche Form, und das hinzugefügte ग ist nichts weiter, als ein sogenannter jama; vgl. den erklär. Index zum Pânini u. d. W.

Str. 347, 27. Calc. Ausg. म्रनूत्तरो. E. म्रनूत्तरे, Schol प्रभानुद्रपोत्त-रुशक्तः । तस्य । यदेव निःसर्गत तदेव वद्ति यद्धदः । नास्त्युत्तर्मस्य म-नुत्तरः ।

Str. 348, 31. Calc. Ausg. ऽववाकग्रती ।

Str 350, 39. = शिद्धादायक, die Scholien. — 40 Calc. Ausg. कद्धस्, B. und E. कद्धर्स्, D. कद्धस्, die Scholien: करत्यावृणोति कदूरः, eine Randglosse: तृतीयवर्गाद्यात्तस्थचतुर्थमध्यो प्यम्

Str. 351, 43. Schol. म्रबद्धमिनयन्तितं मुखमस्य म्रबद्धमुखः। — 44. Calc. Ausg. und D. शक्तः, eine Randbemerkung: कवर्गायानस्थतृती-पमध्या प्यम्

Str. 352, 47. Calc. Ausg. मुठा। — Schol. पथाजात:। पथागता। रिप। — 48. Calc. Ausg. und D. रमेधा, B. und E. म्रमेधाविवर्णाज्ञा,